उर्दू के कवि और उनका काव्य

आए थे जिस चमन से वह बर्बाद हो गया,
अब क्या क़फ़स में याद करें हम बहार को।
उतरे हैं सहने-बाग़ में फूलों के क़ाफ़िले।
नज़रें दिखा रहे हैं उरूसे बहार को।

—'चकबस्त' लखनवी

समीक्षाकार—
पं० गिरिजादत्त शुक्ल "गिरीश" बी. ए.

प्रकाशक—
एस. बी. सिंह,
काशी-पुस्तक-भण्डार,
चौक, बनारस।

प्रथम संस्करण १००० | सन् १९४२ | मूल्य—२॥)
सजिल्द ३)